पाठ-14 महादेवी वर्मा

मूल भाव

महादेवी वर्मा उन प्रतिष्ठित रचनाकारों में हैं, जिन्होंने कविता और गद्य-साहित्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से यश अर्जित किया है। वे छायावाद के चार स्तंभों में में गिनी जाती हैं। उनकी कविता में छायावादी काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ लक्षित होती हैं। उनकी रचनाओं में वैयक्तिक भावनाओं-प्रेम, विरह, पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति हुई है। बदली के उमड़ने, घिरने, बरसने के माध्यम से कवयित्री अपने मन में वेदना के उमड़ने और बरसने को संकेतित करती है। कवयित्री अपनी वैयक्तिक भावनाओं का आरोप प्रकृति के क्रिया व्यापारों में करती है।

भाव पक्ष

- 'मैं नीर भरी दुख की बदली', कविता में 'बदली' अपना परिचय दे रही है । वह 'नीर भरी' है क्योंकि वही जल बरसाती है। वाक्य का स्त्रीलिंग में होना और बदली के साथ 'दुख की' पद यह संकेत भी देता है कि 'मैं' स्वयं कवयित्री के लिए या किसी वेदना-ग्रस्त नारी के लिए भी हो सकता है। इस प्रकार पूरी कविता को अर्थ दो समानांतर स्तरों पर लगाया जा सकता है। पहला - जलपूर्ण उमड़ते-घुमड़ते बादल; और दूसरा-दुखी और वेदनाग्रस्त नारी, जो स्वयं कवयित्री भी हो सकती है।
- इसमें एक ओर तो वर्षाजल से भरी बदली अपना परिचय दे रही है, दूसरी ओर स्वयं कवयित्री अपने वेदनापूर्ण जीवन का संकेत कर रही है।
- पहले 'बदली' के पक्ष में देखें- उसकी हर गर्जना के पीछे, हलचल के पीछे भी स्थिरता बसी है। मानो कोई है जिस पर इस क्रंदन का कोई प्रभाव नहीं होता, वह निस्पंद रहता है। जबकि उस गर्जना पर विश्व प्रसन्न होता है क्योंकि वह भीषण गरमी से आहत है, दुखी है, इसलिए बादलों की हलचल और गर्जन उसे प्रसन्न कर जाती है। बादलों में बसी विद्युत की कौंध दीपकों-सी प्रतीत होती है और उनमें स्थित जल नदी की भाँति प्रवाहित होने को आतुर है।
- दूसरी ओर विरहिणी के पक्ष में भाव होगाः उसके स्पंदन में वह चिर निस्पंदन बसा है, जो सदा से स्पंदन रहित है, स्थिर है, बादलों की गर्जना में पीड़ित और चोट खाए हुए संसार के लोगों की पीड़ा ही अभिव्यक्त हो रही है।ऐसा प्रतीत होता है कि यह गर्जन किसी की पीड़ा के स्वर नहीं, बल्कि कोई ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा हो परंतु यह किसी एक प्रेमी का क्रंदन है। विरहिणी की आँखों में दीपक से जलते रहते हैं। ये दीपक विरहाग्नि के भी हो सकते हैं और आशा के भी। आँसू उसकी पलकों से नदी के समान बहने को आतुर हैं वह अपनी विरह-वेदना को आँसुओं के रूप में प्रवाहित करना चाहती है; ठीक वैसे ही, जैसे बदली जलबूँदों को। भाव स्पष्ट है कि कवयित्री कहना चाहती है कि जिस प्रकार बदली पानी से भरी रहती है, उसी प्रकार मेरी आँखें भी अश्रुपूर्ण रहती हैं।
- प्रसन्नता में मानव-जगत या पशु-जगत की हलचल ही मानो उसके पग-पग का संगीत है। बादलों के उमड़ने के साथ चलने वाली हवा उसकी साँसें हैं, जिनसे पराग झरता है। उसे कवयित्री ने 'स्वप्न-पराग' कहा है। बादलों के साथ लोगों के स्वप्न जुड़े हैं। उनके घुमड़ने पर मानो वही स्वप्नों से पराग झरता है।

नवरंगों से युक्त इंद्रधनुषी आभा ही मानो बादलों के रंग भरे वस्त्र हैं। बादलों की छाया में मलय-बयार, शीतल सुगंधित पवन आश्रय ग्रहण करती है। जब बादल घुमड़ते हैं तो शीतल हवा बहने लगती है। वही कवयित्राी के शब्दों में 'मलय-बयार' है। वह कहती हैं कि प्रियतम की स्मृति मुझे मलय पर्वत से आने वाली शीतल-मंद ,सुगंधित वायु के समान प्रतीत होती है।

- धुएँ जैसे बादल जब क्षितिज पर छाते हैं तो कवयित्री को लगता है मानो क्षितिज की भौंहों पर चिंता का भार बढ़ गया हो। मूर्त की तुलना अमूर्त से करना छायावादी कविता की एक विशेषता है। यहाँ भी मूर्त बादलों की तुलना अमूर्त 'चिंता का भार' से की गई है, ऐसी कल्पनाएँ आपको अन्यत्र भी मिलेंगी।
- ऐसी बदली जब 'रज-कण' अर्थात् मिट्टी पर बरसती है तो परिणाम क्या होता है? चारों ओर नवजीवन के अंकुर फूट आते हैं। जो बीज मिट्टी के नीचे दबे पड़े थे, वे वर्षा की बूँदों के स्पर्श से अंकुरित होने लगते हैं। यह अंकुरण ही नवजीवन का प्रस्फुटन है और बदली का यह कहना उचित है कि वही रजकण से नव-जीवन-अंकुर बन कर निकल पड़ती है।
- विरहिणी पक्ष में भी इनका भावार्थ ग्रहण किया जा सकता है- विरहिणी के पदचापों में संगीत है यौवन का या रूप का संगीत है और उसकी सुगंधित साँसें उसकी कामनाओं की सूचक हैं। उसके रंगीन वस्त्रों में इंद्रधनुषी आभा है और वह जहाँ निकल जाती है वहीं सुगंध ऐसे बिखरती है मानो सुगंधित मलय-बयार चल पड़ी हो। उसकी भौंहों पर इस चिंता का भार है कि प्रिय से मिलन हो पाएगा या नहीं।
- अंत में, जब उससे व्यथा-भार सहन नहीं होता तो उसकी आँखों से आँसू बरस पड़ते हैं। आवेग की अभिव्यक्ति से उसे क्षण भर को शांति मिलती है। उसे लगता है कि नए जीवन के अंकुर फूट पड़े हैं। आँसू बरसाकर विरहिणी मानो संसार को अपनी वेदना का वितरण करती है और उसे नया जीवन प्रदान करती है।
- बदली कहती है, न तो मेरे आगमन से मार्ग गंदा होता है, न चले जाने के बाद कोई पद चिह्न शेष रह जाते हैं। यहाँ बदली के मार्ग की बात है और उसका मार्ग धरती नहीं आकाश मार्ग है। उस पर न तो बादलों के बरसने से कोई गंदगी दिखाई पड़ती है न उनके चले जाने के बाद कोई चिह्न शेष रह जाते हैं। आकाश मार्ग में वे कोई चिह्न नहीं छोड़ जाते। वे जैसे आते हैं बरसकर वैसे ही चले भी जाते हैं, जो कुछ शेष रह जाती है, वे हैं उनके आगमन की स्मृतियाँ। ये स्मृतियाँ अथवा यादें कैसी हैं क्या आप बता सकते हैं? जी हाँ। वे सुख भरी हैं और उन विचारों से तन-मन सिहर उठता है। उनके साथ नवजीवन के प्रस्फुटन और विस्तार की सुधियाँ हैं जो सुख की सिहरन दे जाती हैं।
- यही नवजीवन खेतों, मैदानों, वनों में हरियाली के रूप में दिखाई पड़ रहा है, जो वर्षा के आगमन की, उसके उपकार की याद दिलाता है-सुखकर याद। अन्यथा बादलों का क्या? वे तो आते हैं, और चले जाते हैं। इतने विस्तृत विशाल नभ के किसी कोने में वे घर नहीं बना सकते। सच तो यह है कि सारे नभ में

छाने के बाद भी कोई एक कोना तक उनका अपना नहीं है।

- कवयित्री मानो कह रही है कि संसार में उसके आने या चले जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। उसका कोई पद-चिह्न तक शेष नहीं रहता। हाँ, केवल स्मृतियाँ ही रह जाती है। लोग उसकी वेदना को याद करते हैं और पुलकित होते हैं। इतने विस्तृत संसार के किसी कोने को वह अपना नहीं कह सकी। ऐसी नियति ही नहीं थी कि कोई कोना उसका अपना होता। उमड़ना और मिट जाना ही मानो उसका परिचय और इतिहास था।

शिल्प पक्ष

- काव्यार्थ दो स्तरों पर साथ-साथ खुलता है, अतः लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्तियों का सुंदर प्रयोग है। आप जानते हैं कि जब शब्दों के अर्थ सामान्य ढंग से न खुलकर लक्षणा के आधार पर खुलते हैं तो उसे 'लक्ष्यार्थ' कहा जाता है, जैसे-

  'पलकों में निर्झरिणी मचली,
  'क्षितिज भृकुटि पर घिर धूमिल'

- पूरी कविता में रूपक अलंकार है। मूर्त की अमूर्त से तुलना-

  मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
  चिंता का भार बनी अविरल।

- अमूर्त की मूर्त से तुलना- 'मैं नीर भरी दुख की बदली'

- संपूर्ण कविता में मानवीकरण अलंकार है। जैसे - 'श्वासों से स्वप्न-पराग झरा'

- भाषा बड़ी प्रांजल, संस्कृत-गर्भित और भावानुकूल होती है। वे शब्द-चयन में बहुत कुशल हैं और प्रतीकों व रूपकों के माध्यम से बिंब निर्माण करती हैं।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए।
- 'परिचय इतना, इतिहास यही' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट समझाइए।
- 'महादेवी जी के काव्य में छायावादी काव्य के लक्षण पर्याप्त दिखाई पड़ते हैं'- सिद्ध कीजिए।